❍ 18 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बापदादा से की हुई प्रतिज्ञा को निभाया ?*

➢➢ *सदा उमंग और उत्साह में रहे ?*

➢➢ *पवित्रता का व्रत रखा ?*

➢➢ *संकल्पों की हलचल से मुक्त रहे ?*

────────────────────────

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ आत्मिक प्यार से जितना एक दो के स्नेही सहयोगी बनते हो उतना ही माया के विघ्न हटाने में भी सहयोग मिलता है। *सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। तो परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब है।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं महान भाग्यशाली आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी अपने को महान भाग्यशाली समझते हो ना? देखो कितना बड़ा भाग्य है जो वरदान भूमि पर वरदानों से झोली भरने के लिए पहुँच गये हो। ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओंका है। कोटों में कोई और कोई में कोई में भी कोई। *तो यह खुशी सदा रखो कि जो सुनते थे, वर्णन करते थे, कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा, वह हम ही है।* इतनी खुशी है?

〰✧ सदा इसी खुशी में नाचते रहो - वाह मेरा भाग्य। यही गीत गाते रहो और इसी गीत के साथ खुशी में नाचते रहो। यह गीत गाना तो आता है ना - *'वाह रे मेरा भाग्य' और वाह मेरा बाबा। वाह ड्रामा वाह, यह गीत गाते रहो।*

〰✧ बहुत लकी हो। बाप तो सदा हर बच्चे को लवली बच्चा ही कहते हैं। *तो लवली भी हो, लकीएस्ट भी हो। कभी अपने को साधारण नहीं समझना, बहुत श्रेष्ठ हो। भगवान आपका बन गया तो और क्या चाहिए।* जब बीज को अपना बना दिया तो वृक्ष तो आ ही गया ना। तो सदा इसी खुशी में रहो। आपकी खुशी को देख दूसरे भी खुशी में नाचते रहेंगे।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ मनोरंजन के रूप से मनाना वह अलग चीज है। वह तो संगमयुग है मौजों का युग, इसलिए मनोरंजन की रीति से भी मनाते हो और मनाओ, खूब मनाओ। लेकिन *परमात्म रंग में रंग जाना अर्थात बाप समान बन जाना।*

〰✧ यह है रंग में रंग जाना। जैसे बाप अशरीरी है, अव्यक्त है वैसे अशरीरी-पन का अनुभव करना वा अव्यक्त फरिश्ते-पन का अनुभव करना - यह है रंग में रंग जाना। *कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बन के काम करो।*

〰✧ *अशरीरी-पन की स्थिति का जब चाहो तब अनुभव करो।* ऐसे मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हो। ऑर्डर करो - अशरीरी बन जाओ। ऑर्डर किया और हुआ। फरिश्ते बन जाये।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी तो चलते-फिरते ऐसे अनुभव होना चाहिए जैसे साकार को देखा- चलते-फिरते या तो फ़रिश्ते रूप का या भविष्य रूप का अनुभव होता था, तभी तो औरों को भी होता था।* मैं टीचर हूँ, मैं सेवाधारी हूँ- यह तो जैसा समय वैसा स्वरूप हो जाता है। *अब स्वयं को फ़रिश्ते रूप में अनुभव करो तो साक्षात्कार होगा। साक्षात्कार का रूप कौन-सा है? फ़रिश्ता रूप बनना, चलते-फिरते फ़रिश्ता स्वरूप। अगर साक्षात् फ़रिश्ते नहीं बनेंगे तो साक्षात्कार कैसे करा सकेंगे? तो अब विशेष पुरुषार्थ कौन-सा है? यही कि फ़रिश्ता इस साकार सृष्टि पर आया हूँ सेवा अर्थ।* फ़रिश्ते प्रकट होते हैं, फिर समा जाते हैं। फ़रिश्ते सदा इस साकारी सृष्टि पर ठहरते नहीं, कर्म किया और गायब। तो जब ऐसे फ़रिश्ते होंगे तो इस देह और देह के सम्बन्ध व पुरानी दुनिया में पाँव नहीं टिकेगा। *जब कहते हो कि हम बाप के स्नेही हैं तो बाप सूक्ष्मवतनवासी और आप सारा दिन स्थूलवनतवासी, तो स्नेही कैसे? तो सूक्ष्मवतनवासी फ़रिश्ते बनो।* सर्व आकर्षणों या लगावों के रिश्ते और रास्ते बन्द करो तो कहेंगे कि बाप-स्नेह हो। *यहाँ होते हुए भी जैसे कि नहीं है- यह है लास्ट स्टेज । विशेष सेवार्थ निमित्त हो, तो पुरुषार्थ में भी विशेष होना चाहिए। जब दूसरों को चलते-फिरते अनुभव होगा कि आप लोग फ़रिश्ते हैं, तो दूसरे भी प्रेरणा ले सकेंगे।* अगर साकार सृष्टि की स्मृति से परे हो जाओ तो जो छोटी-छोटी बातों में टाइम वेस्ट करते हो, वह नहीं होगा। तो अब हाई जम्प लगावो। *साकार सृष्टि से एकदम फ़रिश्तों की दुनिया में व फ़रिश्ता स्वरूप- इसको कहते हैं हाई जम्प। तो छोटी-छोटी बातें शोभेंगी नहीं।* तो यह बाप की विशेष सौगात है। सौगात लेना अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप बनना। तो बाप भी यह फ़रिश्ता स्वरूप का चित्र सौगात में देते हैं। इस सौगात से पुरानी बातें सब समाप्त हो जायेंगी। क्या और क्यों की रट नहीं लगानी है। *निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति, परिवर्तन शक्ति- जब ये तीनों शक्तियाँ होंगी तो ही एक-दूसरे को खुशखबरी सुनायेंगे। अगर खुद में परिवर्तन नहीं तो दूसरों में भी परिवर्तन नहीं ला सकेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सदा उमंग और उत्साह में रहना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा की कुटिया में बेठी मै आत्मा... प्यारे बाबा का रोम रोम से शुक्रिया करते हुए सोचती हूँ... कि देह की दुनिया, और दुखो के कंटीले, पथरीले रास्तो पर.... जो मै आत्मा उदास, थकी और लहूलुहान थी... प्यारे बाबा ने अपनी बाँहों का सहारा देकर... *मुझे उस दुबन से बाहर निकाला है... और अपने प्यार और गुणो से सजाकर ,मुझे असीम उमंगो से भर दिया है.*.. अब मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार की छाँव में... दुखो की तपन से निकल गयी हूँ और सुख भरी छत्रछाया में आ गयी हूँ... *अब जीवन मीठे बाबा के साथ, खुशियो में चहक रहा है... हल्का और सुखो से महक रहा है.*.. यही सच्ची खुशियां मीठे बाबा से पाकर मै आत्मा... पूरे विश्व में बिखेर रही हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने प्यार में आनन्द की चरमसीमा पर पहुंचाते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... उमंग उत्साह सर्व के उड़ती कला का आधार है...तो *सदा मीठे बाबा से प्राप्त सर्व खजानो, शक्तियो, और गुणो के नशे रहना... वाह मेरा खुबसूरत भाग्य वाह... सदा इस नशे में आनन्दित रहना.*.. हम थे, हम ही है, और हम ही बनेगे... यह स्मृति रग रग में समा कर...सदा ईश्वरीय प्रेम में डूबे रहो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से शक्तियाँ पाकर उमंगो में उल्लासित होकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपको यादो में अपने सत्य वजूद को पाकर पुलकित हूँ... और यादो में विकर्मो की कालिमा से छूटकर... खुबसूरत देवता बन रही हूँ...इस ख़ुशी में रोम रोम से डूबी हुई हूँ... *मेरा भाग्य कितना प्यारा है कि मै आत्मा, आपके हाथो में यूँ पलकर दिव्यता से श्रंगारित हो रही हूँ.*.."

❊ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा अखूट खजानो की मालिक बनाते हुए कहा :-* "सदा सेवा की लगन में मगन रहकर... स्वयं को प्राप्त शक्तियो को...सर्व आत्माओ को प्राप्ति कराने वाले बनकर... ईश्वर पिता के दिल तख्त पर मुस्कराओ...सदा अधिकारी बालक सो मालिक बनकर... मीठे बाबा का विशेष स्नेह प्राप्त कर... सदा के सम्पन्न बन जाओ... *भाग्य विधाता द्वारा जो भाग्य मिला है, उसे हर दिल को बाँट कर... उनका भाग्य भी आप समान बना आओ.*..

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से पाये वरदानों से सजधज कर कहती हूँ :-* "प्यारे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपको पाकर, आपकी स्नेहिल बाँहों में आकर, कितने मीठे भाग्य की पा गयी हूँ.*.. और यह सच्ची खुशिया, यह शक्तियो, और गुणो का खजाना... हर दिल को बाँट कर, सबका जीवन... *मेरे जैसा खुशियो से महकता हुआ सजा रही हूँ.*.." सबको प्यारे बाबा से मिलवा रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने प्यार में बेफिक्र बादशाह बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता के प्यार भरी छत्रछाया में रहकर... एक बल एक भरोसे से निश्चिन्त होकर... मीठे बाबा के सारे खजानो पर अपना अधिकार जमालो... *हजार भुजाओ वाले, साथी को सदा साथ रख कर... विजय पथ पर आगे बढे चलो.*.. और सदा सेवाओ में सहयोग का पानी देकर... विश्व का कल्याण करने वाली महान आत्मा बन... बापदादा के दिल तख्त पर मुस्कराओ...."

➳ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के साये में अपने भाग्य की संदरता में चार

चाँद लगाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा आपको पाकर, देह की सारी उलझनों से निकल, सदा के लिए निश्चिन्त हो गयी हूँ... *भगवान हर पल, हर कदम पर मेरा साथी बनकर, साथ चल रहा है... मै आत्मा जीवन के पथ पर अकेली नही, बल्कि आप संग असीम खुशियो में उड़ रही हूँ.*..."मीठे प्यारे बाबा से असीम खुशियां अपने दामन में सजाकर मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आयी..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बापदादा से की हुई प्रतिज्ञा को निभाना*"

➳ _ ➳ दिल को सुकून और चित को चैन देने वाली अपने प्यारे पिता की मीठी याद में मैं जैसे ही अपने मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ एक सुखद अनुभूति से भर उठती हूँ और *मन ही मन विचार करती हूँ कि आज दिन तक देह और देह के सम्बन्धियों को याद करके सिवाय दुख के और कुछ भी प्राप्त नही हुआ। स्वार्थ से भरे इन दैहिक सम्बन्धो में सारी दुनिया के मनुष्य मात्र सुख ढूढने की कोशिश में लगे हुए हैं किंतु सुख इन दैहिक रिश्तों की याद में नही केवल एक प्यारे प्रभु की याद में हैं और इस बात का अनुभव मुझ आत्मा ने कर लिया है*। कितनी सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो मेरे प्यारे प्रभु ने स्वयं आकर याद की इस सच्ची रूहानी यात्रा पर मुझे चलना सिखाया और ऐसे अतीन्द्रीय सुख का अनुभव करवाया जो देवतायों के भाग्य में भी नही।

➳ _ ➳ मन ही मन अपने प्यारे पिता का धन्यवाद करके, अपार सुख का अनुभव करने के लिए अपने मन बुद्धि को मैं *देह और देह की दुनिया के हर संकल्प, विकल्प से मुक्त करके, और सब संग तोड़, प्रीत की रीत अपने उस एक प्यारे पिता के साथ जोड़ उनकी मीठी याद में बैठ जाती हूँ और सेकेण्ड में उनके स्नेह की मीठी फहारों को अपने ऊपर पडते हुए स्पष्ट अनभव करते एक

विशेष सुखद अनुभूति में खो जाती हूँ*। ऐसा लग रहा है जैसे मीठी - मीठी सुखद फ़ुहारों के रूप में सुख का झरना मेरे ऊपर बह रहा है और निरन्तर मेरे ऊपर बरसता हुआ मुझे अपार सुख दे रहा है। *एक ऐसे अवर्णनीय सुखमय संसार में मैं विचरण कर रही हूँ जहाँ देह और देह के दुख देने वाले सम्बन्ध नही, केवल एक निराकार के साथ जुड़ा ऐसा अटूट सम्बन्ध है जो सर्व सम्बन्धो का अविनाशी सुख प्रदान कर रहा है*।

➳ _ ➳ ऐसे सुखमय संसार में विचरण करती मैं बिंदु आत्मा अपने सुख के सागर बिंदु पिता से मंगल मिलन मनाने अब देह का आधार छोड़ *अपने पिता के निराकारी वतन की ओर चल पड़ती हूँ जहाँ सुख के सागर की शीतल लहरे निरन्तर प्रवाहित होती है और सुख, शांति की तलाश में भटक रही आत्माओं को अपार सुख से भरपूर कर, उनकी जन्म - जन्म की प्यास बुझा देती हैं*। ऐसे सुख के सागर अपने सुखदाता बाप के पास जाने वाली मन बुद्धि की सुखमय यात्रा पर निरन्तर आगे बढ़ते हुए मैं धीरे - धीरे 5 तत्वों से पार, सूक्ष्म लोक से होती हुई उस दिव्य परमलोक, ब्रह्मलोक में प्रवेश करती हूँ जहाँ मेरे सुखदाता शिव पिता के सुख के गहन वायब्रेशन चारो ओर फैले हुए हैं।

➳ _ ➳ सुख, शांति के गहरे अनुभवों का आनन्द लेती हुई मैं आत्मा धीरे - धीरे अपने प्यारे पिता के समीप पहुँच जाती हूँ और जा कर उन्हें टच करती हूँ। *बाबा से आ रही सर्वशक्तियों का तेज करेन्ट सीधा मुझ आत्मा में प्रवाहित होता है और मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारो की कट को भस्म कर, मुझे एकदम हल्का लाइट माइट बना देता है*। हर बोझ से मुक्त इस हल्की सुखदायी स्थिति में गहन अतीन्द्रीय सुख की अनुभूति करते हुए मैं जैसे अपने आप को ही भूल जाती हूँ और बाबा में समाहित बाबा का ही स्वरूप बन जाती हूँ। *सम्पूर्ण प्योर, सर्व गुणों, सर्वशक्तियो से भरपूर अपने इस स्वरूप के साथ अब मैं बाबा से अलग होकर वापिस अपनी साकारी दुनिया की ओर लौट आती हूँ और अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ*।

➳ _ ➳ इस संपूर्ण पवित्र और सुखदाई स्वरूप को सदा ऐसे ही बनाये रखने के लिए अपने प्यारे पिता से मैं अपने ब्राह्मण जीवन को सदा पवित्र रखने का वचन देती हूँ और सब सँग तोड. एक बाप के याद में रहने की अपने आप से

दृढ़ प्रतिज्ञा करती हूँ। *अपनी इस प्रतिज्ञा का दृढ़ता से पालन करने के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण पवित्रता को अपने जीवन में धारण करने का अब मैं पूरा अटेंशन दे रही हूँ। अपने हर संकल्प, बोल और कर्म को सम्पूर्ण पवित्र और शुद्ध बनाने के लिए, स्वयं को दैहिक भान से मुक्त रख, सब सँग तोड़, एक बाप की याद में रहने का पुरुषार्थ करते हुए, अपने लक्ष्य को पाने की दिशा में मैं अब निरन्तर आगे बढ़ रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ज्ञान, गुण और शक्तियों रूपी खजानो द्वारा सम्पनता का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सम्पत्तिवान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा मोहब्बत में सदा लवलीन रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा मेहनत का अनुभव करने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं निरन्तर योगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *अब बापदादा मन्सा शक्ति द्वारा सेवा को शक्तिशाली बनाने चाहते हैं।* वाणी द्वारा सेवा चलती रही है, चलती रहेगी, लेकिन इसमें समय लगता है। *समय कम है, सेवा अभी भी बहुत है।* रिजल्ट आप सबने सुनाई। अभी तक 108 की माला भी निकाल नहीं सकते। 16 हजार, 9 लाख - यह तो बहुत दूर हो गये। इसके लिए फास्ट विधि चाहिए। *पहले अपनी मन्सा को श्रेष्ठ, स्वच्छ बनाओ, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये।* अभी तक मैजारिटी के वेस्ट संकल्प की परसेन्टेज रही हुई है। *अशुद्ध नहीं लेकिन वेस्ट हैं इसलिए मन्सा सेवा फास्ट गति से नहीं हो सकती।* अभी होली मनाना अर्थात् *मन्सा को व्यर्थ से भी होली बनाना।*

✺ *ड्रिल :- "मन्सा शक्ति द्वारा सेवा को शक्तिशाली बनाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा खुले आसमान के नीचे बैठी... आत्मिक स्थिति का आनंद ले रही हूँ... यह शीतल हवा के साज़... पक्षियों के मधुर गीत... पेड़-पौधे व पत्तों के झूलने की आवाज़... सभी मुझे मेरे बाबा का संदेश सुना रहे हैं... *मेरे मन की लौ... महाज्योति... वरदाता... प्रभु पिता के साथ निरंतर लगी हुई है...* मेरे प्राणप्रिय मीठे बाबा मुझ आत्मा को... अपनी आंखों का नूर बनाते... दिलतख्तनशीन बनाते हैं... उनकी मीठी मीठी बातें सुनकर... उन्हें जीवन में धारण करती हुई... आनन्द से ड्रामा में पार्ट बजाती जा रही हूँ...

➳ _ ➳ एक सेकण्ड में ही मैं शक्तिशाली आत्मा... ज्योतिबिंदु स्वरूप में परमधाम... अपने प्यारे शिवबाबा के सम्मुख पहुंच जाता हूँ... सर्व शक्तियों के स्रोत... मेरे बाबा मुझ पर सर्व शक्तियों की किरणें बरसा रहे हैं... मुझे सर्वशक्ति संपन्न बना रहे हैं... अब मन्सा शक्ति द्वारा... फरिश्तों की दुनिया में फरिश्ता स्वरुप में... बाप दादा के सम्मख पहंच गया हूँ... बापदादा अपने वरदानी हस्तों

से... मुझ आत्मा को... *सर्व शक्तियों के सर्व खजाने सफल कर सफलतामूर्त भव... का वरदान दे रहे हैं...*

➳ _ ➳ बापदादा के साथ मैं फरिश्ता विश्व की सेवा कर रहा हूँ... डबल लाइट... शक्तिशाली स्थिति द्वारा... विश्व की आत्माओं को सकाश देता हुआ... उन्हें पीड़ाओ से मुक्त कर रहा हूँ... अब साकार वतन में उतर कर... भ्रकुटी अकाल तख्त पर विराजमान हो जाता हूँ... अब इस धरा पर मैं एक सामान्य व्यक्ति नहीं... विशेष आत्मा हूँ... *बेहद स्मृति द्वारा हद की बातों को समाप्त करने वाली... मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ...* चलते फिरते भी नेचुरल स्मृति है... आत्मिक स्थिति है... कहीं भी किसी में कोई आसक्ति नहीं है...

➳ _ ➳ मैं शक्ति स्वरुप... सदा सेवाओं में तत्पर हूँ... श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना... संगमयुगी समय का खज़ाना... सर्व शक्तियों का खज़ाना... सर्व खजाने सफल कर रही हूँ... सेवाओं में सफलता मूर्त हूँ... मैं बाप समान सेवाधारी आत्मा... बुद्धि योग से... सदा एक बाप की प्यारी... सबसे न्यारी हूँ... *संकल्पों की वैल्यु... संगमयुगी समय की वैल्यु को समझकर... हर सेकंड को अमूल्य बना और बनाने की सेवा कर रही हूँ...* मन्सा शक्ति के द्वारा स्नेह और प्रेम से सेवा करते हुए... दुआओं का खज़ाना भी बढ़ाती जा रही हूँ...

➳ _ ➳ मुझ श्रेष्ठ आत्मा का... हर संकल्प... हर बोल... हर कर्म श्रेष्ठ है... अटैन्शन और चैकिंग की विधि द्वारा... व्यर्थ को पूर्ण रूप से समाप्त कर रही हूँ... सर्वशक्तियों की खान बन गई हूँ... देह की प्रवृति से पार हो कर... दिन रात सेवा में मग्न हूँ... कंपनी और कंपैनियन एक बाबा को ही बनाकर... समर्थ स्थिति में स्थित हूँ... मनसा... वाचा... चाल व चेहरा शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ... *मैं शक्तिस्वरूप आत्मा... सेवाएं करती हुई... सहज ही सफलता का सितारा बनते हुए अनुभव कर रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔